प्रश्न - हिन्दी रेखाचित्र साहित्य के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - हिन्दी साहित्य में रेखाचित्र विधा का उद्भव अंग्रेजी और रूसी साहित्य के रेखाचित्रों के प्रभाव के कारण हुआ। 'रेखाचित्र' शब्द अंग्रेजी के 'स्कैच' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। जैसे 'स्कैच' में रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति या वस्तु का चित्र प्रस्तुत किया जाता है ठीक वैसे ही शब्द रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसके समग्र रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। हिन्दी साहित्य में कुछ रेखाचित्रों को संस्मरणात्मक रेखाचित्र भी कहा जाता है, जैसे - महादेवी वर्मा कृत 'अतीत के चलचित्र'।

हिन्दी रेखाचित्र साहित्य को हम दो भागों में बाँट सकते हैं — (1) छायावाद युग — प्रारम्भ और विकास काल।
(2) छायावादोत्तर युग — उत्कर्ष काल।

(1) छायावाद युग — हिन्दी रेखाचित्र गद्य विधा का विकास छायावादी युग से ही माना जाता है। पहले पहल रेखाचित्र पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए किन्तु सन 1937 में पं. श्रीराम शर्मा का पहला रेखाचित्र संग्रह 'बोलती प्रतिमा' प्रकाशित हुआ। अधिकांश विद्वान पद्मसिंह शर्मा को हिन्दी रेखाचित्र का जन्मदाता या प्रवर्तक मानते हैं। इनके 'महाकवि अकबर' को हिन्दी का पहला रेखाचित्र माना जाता है। इनके 'पद्म पराग' से हिन्दी रेखाचित्र के विकास का आरम्भ माना जाता है।

हिन्दी रेखाचित्र विधा के विकास में जिन साहित्यकारों ने योगदान दिया उनमें प्रमुख साहित्यकारों और उनकी कृतियों का परिचय ~~[illegible]~~ निम्नलिखित है —

(1) पद्मसिंह शर्मा — शर्मा जी के संस्मरणों में रेखाचित्र के तत्वों की विद्यमानता है। 'महाकवि अकबर' और 'पं. गणपति शर्मा' इनके ऐसे ही रेखाचित्र हैं। इनके निबंध संग्रह 'पद्म पराग' में स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. भीमसेन शर्मा रेखाचित्र की कोटि में ही आते हैं।

2. बनारसीदास चतुर्वेदी - बनारसीदास चतुर्वेदी के रेखाचित्रों की शैली सरस और व्यंग्यपूर्ण है। इनके रेखाचित्रों में प्रमुख साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों, देशभक्तों व समाज सेवकों के चरित्र अंकित किए हैं। चतुर्वेदी जी ने अनेक वर्षों तक 'विशाल भारत' का सम्पादन किया। इससे पूर्व उन्होंने 'मधुकर' का भी सम्पादन किया था। इन पत्रिकाओं में रहते हुए आपने अनेक रेखाचित्र लिखे। छायावाद युग में आप का एक ही ऐसा रेखाचित्र संग्रह 'प्रिंस क्रोपाटकिन' शीर्षक से सन 1940 में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद 'हमारे आराध्य (1952), रेखाचित्र (1953) तथा सेतुबन्ध (1962) में प्रकाशित हुए।

'रेखाचित्र' इनकी सबसे सशक्त रचना है। इस में 40 रेखाचित्र हैं —

3. पं. श्रीराम शर्मा — श्रीराम शर्मा हिन्दी के विख्यात रेखाचित्रकार हैं। आपके अनेक रेखाचित्र 'विशाल भारत', 'सरस्वती और हंस' जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। सन 1937 में आपका पहला रेखाचित्र संग्रह 'बोलती प्रतिमा' प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त 'वे जीते कैसे हैं (1957) तथा 'जंगल के जीव (1949) में प्रकाशित हुए। शर्मा जी ने उन दिनों रेखाचित्र लिखे जब रेखाचित्र विधा को मान्यता नहीं मिली थी।

4. महादेवी वर्मा — महादेवी वर्मा उत्कृष्ट रेखाचित्रकार हैं। इनके स्मृति चित्रों को रेखाचित्र कहा जाए या संस्मरण? इसलिए कुछ इतिहास लेखकों ने दोनों का विवेचन एक साथ ही किया है।

महादेवी जी के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में प्रमुख हैं — रामा (1930) बिन्दा (1939), सबिया तथा बिट्टो (1935) तथा घीसा (1936) इन रेखाचित्रों में महादेवी जी के व्यक्तित्व की समग्रता देखने को मिलती है।

इसके बाद आपके रेखाचित्र संग्रह — 'अतीत के

Scanned with CamScanner

चलचित्र' (1941), 'स्मृति की रेखाएँ' (1943) और 'पथ के साथी' (1956) में प्रकाशित हुए। 'पथ के साथी' में महादेवी जी ने अपने समकालीन साहित्यकारों के रेखाचित्र प्रस्तुत किए हैं।

सन् 1970 में महादेवी जी के अनेक रेखाचित्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इनमें 'धर्मयुग' साप्ताहिक में प्रकाशित नीलू कुत्ता, सोना हिरणी, दुर्मुख खरगोश काफी लोकप्रिय हुए।

5. शिव पूजन सहाय — सहाय जी का पहला रेखाचित्र सन् 1934 ई. में प्रकाशित हुआ था। इनकी कृति 'वे दिन वे लोग' में भी कुछ रेखाचित्र शामिल हैं।

6. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला — सन् 1939 ई. में निराला जी का 'कुल्ली भाट' और सन् 1941 में 'बिल्लेसुर बकरिहा' रेखाचित्र प्रकाशित हुए। 'कुल्ली भाट' रेखाचित्र में निराला जी का आत्मचरित भी देखने को मिलता है।

इस युग में अन्य रेखाचित्र लिखने वालों में वृन्दावनलाल वर्मा, सियाराम शरण गुप्त, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, मोहन लाल महतो तथा वियोगी हरि के नाम भी शामिल हैं।

② छायावादोत्तर युग — उत्कर्ष काल —

इस युग में रेखाचित्र विधा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान बड़ा महत्वपूर्ण रहा। सन् 1939 में 'हंस' पत्रिका का रेखाचित्र विशेषांक प्रकाशित हुआ। इस अंक में 15 साहित्यकारों द्वारा लिखे रेखाचित्र शामिल थे।

सन् 1940 में बनारसी दास चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में 'मधुकर' का रेखाचित्र विशेषांक प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त मधुकर (टीकमगढ़) माधुरी (लखनऊ) विशाल भारत (कलकत्ता), सरस्वती (प्रयाग), सुधा (लखनऊ) तथा

Scanned with CamScanner

हंस (वाराणसी) में अनेक रेखाचित्र प्रकाशित हुए। इस युग के प्रमुख रेखाचित्रकार और उनकी कृतियों का परिचय निम्नलिखित है —

(1) रामवृक्ष बेनीपुरी — आप का प्रथम रेखाचित्र संग्रह 'लाल तारा' सन 1938 में प्रकाशित हुआ जो उनके विद्रोही और मार्क्सवादी दृष्टिकोण का परिचायक है। यह उनका बौद्धिकता प्रधान रेखाचित्र संग्रह है। इसमें हलवाहा, हँसिया और हथौड़ा, कुदाल, रेलगाड़ी आदि का रेखांकन किया गया है। उसके बाद सन 1946 में 'माटी की मूरतें' छपा। इसमें रजिया, बलदेव सिंह, सरजू भइया, भउजी आदि ग्रामीण परिचितों के रेखाचित्र है। इस रेखाचित्र ने हिन्दी साहित्य जगत में तहलका मचा दिया। सन 1950 में इनका तीसरा रेखाचित्र संग्रह — 'गेहूँ और गुलाब' प्रकाशित हुआ। इसके अधिकांश रेखाचित्र प्रतीकात्मक है। चौथा रेखाचित्र संग्रह 1957 में 'मील के पत्थर' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

(2) प्रो. प्रकाश चन्द गुप्त — गुप्त जी ने रेखाचित्र विधा को एक नया मोड़ दिया। आपने पहले पहल पंत जी द्वारा सम्पादित पत्र 'रूपाभ' में रेखाचित्र लिखे। 'हंस' के रेखाचित्र विशेषांक में भी इनके रेखाचित्र को स्थान मिला। इनके रेखाचित्र का प्रथम संग्रह 'रेखाचित्र' शीर्षक से सन 1940 में प्रकाशित हुआ। फिर 1947 में 'पुरानी स्मृतियां' और 'नए स्केच' प्रकाशित हुए। इनके रेखाचित्र ताई, गाँव की साँझ, पीपल, रानी खेत की रात आदि में आपकी व्यापक मानवीय दृष्टि तथा प्रगतिशील विचारधारा के दर्शन होते हैं। आप अपनी प्रगतिवादी विचारधारा के कारण हिन्दी समीक्षा के जगत में जाने जाते हैं।

(3) देवेन्द्र सत्यार्थी — सत्यार्थी जी का प्रसिद्ध रेखाचित्र संग्रह

Scanned with CamScanner

'रेखाएँ बोल उठीं' सन् 1959 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने रेखाचित्रों के क्षेत्र में एक नई शैली को जन्म दिया है। इससे पूर्व सन् 1954 में 'कला के हस्ताक्षर' शीर्षक कृति में अनेक निबन्धों में रेखाचित्र के तत्व खोजे जा सकते हैं।

(4) कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर — प्रभाकर जी का पहला रेखाचित्र संग्रह 'जिन्दगी मुस्काई' सन 1953 में प्रकाशित हुआ। प्रभाकर जी कृत 'भूले हुए चेहरे', 'बाजे पायलिया के घुँघरू', 'दीप जले शंख बजे', 'माटी हो गई सोना', 'क्षण बोले कण मुस्काए', 'महके आँगन चहके द्वार' रेखाचित्र संग्रह हैं। इनमें प्रभाकर जी की शैली की सजीवता एवं व्यंग्य-विनोद की पटुता के दर्शन होते हैं।

(5) विष्णु प्रभाकर — विष्णु प्रभाकर जी ने 'कुछ शब्द : कुछ रेखाएँ' में सामाजिक स्थितियों तथा उनके मूल में छिपी विसंगतियों का चित्रण किया है। इसके अलावा उनके 'हँसते निर्झर : दहकती भट्ठी' रेखाचित्र संग्रह हैं।

अन्य रेखाचित्र और उनकी कृतियाँ

हिन्दी रेखाचित्र विधा के विकास में योगदान देने वालों में प्रमुख नाम हैं — जगदीश चन्द्र माथुर (दस तस्वीरें), उपेन्द्रनाथ अश्क (रेखाचित्र और चित्र 1955) (मण्टो मेरा दुश्मन—1955) तथा (ज्यादा अपनी कम परायी — 1959), अज्ञेय (एक बून्द सहसा उछली) विष्णु प्रभाकर (कुछ शब्द कुछ रेखाएं तथा हँसते निर्झर दहकती भट्ठी) शान्तिप्रिय द्विवेदी (स्मृतियाँ और कृतियाँ — 1966) गुलाब राय (मेरी असफलताएं), डॉ. नगेन्द्र (होमवती देवी - 1950)।

(अन्य आदि)